website: www.pawanprawah.com
पवन प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

हम पूर्व अंक-9 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स, कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में प्रयागराज तीर्थ स्थल की भूमिका के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण को जानने का प्रयास करेंगे।

भाग-10

गतांक से आगे

(6) श्रृंग्वेरपुर (महातीर्थ प्रयाग का प्रवेशद्वार)

प्रयाग से मोटर-बस श्रृंग्वेरपुर जाती है। इलाहाबाद स्टेशन से 35किमी0 दूर रामचौरा रोड स्टेशन है। वहाँ से श्रृंग्वेरपुर 5 किमी0 है। भगवान श्रीराम ने वनवास के समय यहाँ निषादराज गृह का आग्रह मानकर रात्रि विश्राम किया था। यहाँ श्रृंगी ऋषि तथा उनकी पत्नी दशरथ सुता शान्ता देवी का मन्दिर है। ग्राम से पश्चिम दो फर्लांग पर गंगा जी में ऋषि श्रृंग के नाम पर विभाण्डक कुण्ड है। श्रृंग्वेरपुर से लगभग 1 मील पर रामचौरा ग्राम है। वहाँ गंगा किनारे एक मन्दिर में श्रीराम के चरण चिह्न हैं। इस पौराणिक स्थली पर 1990 से कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर पाँच दिवसीय राष्ट्रीय रामायण मेले का आयोजन प्रतिवर्ष लगातार हो रहा है।

उपरोक्त स्थलों के अतिरिक्त सरस्वती घाट, वरुआ घाट, रामघाट, संगम, श्यमशान घाट, द्रौपदी घाट, गऊ घाट, ककरहाघाट आदि इलाहाबाद के प्रमुख तीर्थ यात्रा के स्थल हैं। आनन्द भवन को प्रयाग में तीर्थ केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त है क्योंकि यहां आने वाला प्रत्येक तीर्थयात्री आनन्द भवन अवश्य जाता है।

अन्य पर्यटन स्थल

(1) आनन्द भवन

1929 में लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता श्री जवाहर लाल नेहरू ने किया। उन्हीं की अध्यक्षता में लाहौर कांग्रेस के अवसर पर रावी नदी के तट पर 26 जनवरी को पूर्ण स्वतंत्रता का निश्चय कांग्रेस ने किया। यह पहला ऐतिहासिक निर्णय था जिसने अब तक के चले आते हुए स्वतंत्रता आन्दोलन को एक निर्णायक मोड़ दिया। इसी समय के आस-पास 1930 में श्री मोती लाल जी ने अपना निवास स्थान 'आनन्द भवन' राष्ट्र को सौंपा। एक पिता के कारण अपना निवास स्थान उन्हें अपने पुत्र को देना चाहिए था लेकिन उन्होंने एक महान राष्ट्र सेवक के नाते अपना भवन देश की **सबसे बड़ी संस्था भारतीय**

कांग्रेस के अध्यक्ष को दे दिया।

1928 से 1947 तक अखिल भारतीय कांग्रेस का प्रधान कार्यालय बराबर इलाहाबाद में ही रहा। नमक सत्याग्रह आन्दोलन में गांधी जी के आदेश पर राष्ट्रीय कांग्रेस जवाहर लाल जी के नेतृत्व में इस महान संघर्ष में आ गयी। जवाहर लाल जी ने गिरफ्तार होने के पहले अपने पिता मोतीलाल नेहरू जी को अध्यक्ष पद का उत्तराधिकारी बनाया। मोतीलाल नेहरू जी ने अस्वस्थ होते हुए भी नमक सत्याग्रह आन्दोलन को अपनी पूरी ताकत से आगे बढ़ाया और संघर्ष करते-करते मृत्यु को भी वरण किया। पत्नी स्वरूप रानी ने महिलाओं के जत्थे का नेतृत्व करते हुए सड़क पर पुलिस की मार खायी और वे धूल में बेहोश होकर गिर पड़ी।

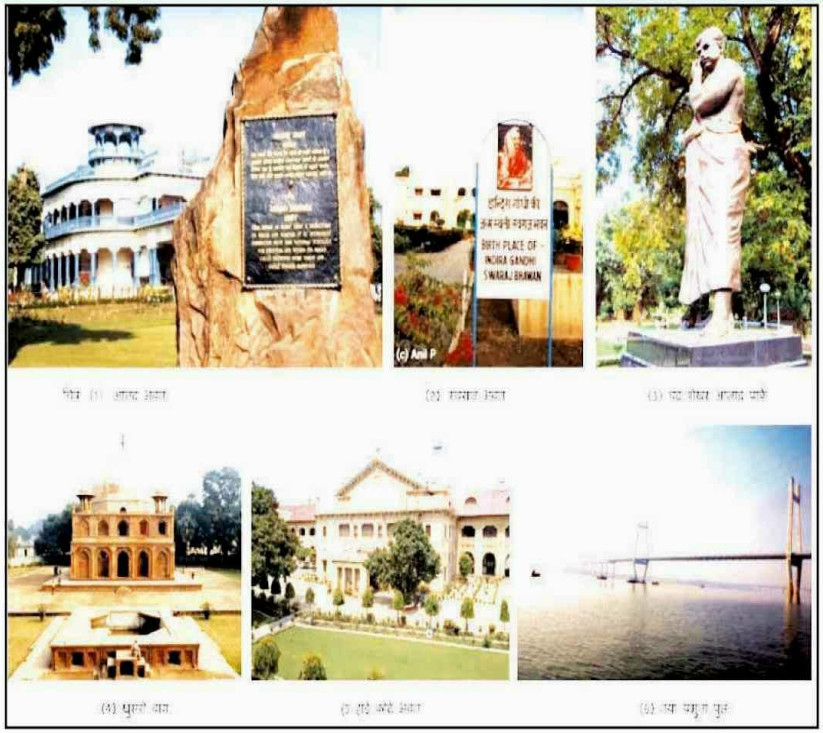

(2) स्वराज भवन एवं बाल भवन

मार्च 1930 में मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद स्थित अपना आवास राष्ट्र को दान कर दिया और उसका नाम स्वराज भवन रख दिया और इसे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का मुख्यालय बना दिया गया।

(3)चन्द्रशेखर आजाद पार्क

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में जिन क्रान्तिकारी वीरों का नाम अमर है, उनमें चन्द्रशेखर आजाद का नाम प्रथम पंक्ति के आत्म बलिदानियों में से है। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को हुआ था (गुप्ता, मन्मथनाथ, 1985)। यद्यपि उनका जन्म अलीराजपुर स्टेट, मध्य प्रदेश के भावरा नामक स्थान में हुआ था, किन्तु इलाहाबाद उनका कार्यक्षेत्र था और अन्त में यहीं पर वीरगति प्राप्त होने के कारण इलाहाबाद के साथ उनका सम्बन्ध अटूट रूप में जुड़ा हुआ है। उनकी जीवनी सूत्रों से विदित होता है कि बाल्यकाल से ही उनमें देश प्रेम की भावना भर गयी थी (टण्डन, हरिमोहन दास, 2001)। चन्द्रशेखर आजाद सदैव एक कांटे की तरह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के गले में खटकते रहे। 27 फरवरी 1931 ई0 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में वे एकाएक पुलिस द्वारा घेर लिये गये। चारों ओर फैले सिपाहियों से कई घण्टों लड़ते रहे और गोलियाँ चलाते रहे, किन्तु अन्त में स्वयं की गोली के शिकार होकर वीरगति को प्राप्त हुए।

कम्पनीबाग जिसका वर्तमान नाम चन्द्रशेखर आजाद पार्क है, जिस स्थान पर आजाद शहीद हुए थे, वहाँ पर उनका एक स्मारक बना हुआ है। आजाद का चरित्र वर्तमान और भविष्य में देशभक्त भारतीय युवकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

(4) खुसरोबाग

1597 ई0 में इलाहाबाद के सूबेदार के रूप में राजकुमार डेनियल की नियुक्ति हुई। 1599-1605 ई0 का इलाहाबाद का इतिहास राजकुमार सलीम के विद्रोहों से प्रभावित हुआ। बाद में सौतेली माँ सुल्ताना सलीमा बेगम ने राजकुमार तथा बादशाह के मध्य सन्धि करा दी। 1604 ई0 में शाह बेगम सलीम की पत्नी तथा खुशरो की माँ ने पिता-पुत्र सम्बन्धों से तंग आकर आत्महत्या कर ली। उनकी कब्र खुल्दाबाद के बगीचे में बनी जहाँ बाद में जहाँगीर ने खुशरो तथा उसकी बहन की भी कब्रें बनवाई तथा बगीचे का नाम खुशरोबाग रखा।

(5)इलाहाबाद उच्च न्यायालय

उत्तर प्रदेश का उच्च न्यायालय (हाईकोर्ट) इलाहाबाद में ही है। यह देश का नहीं अपितु एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा न्यायालय है। इसकी स्थापना 1866 में हुई। यह भारत का चौथा सबसे पुराना उच्च न्यायालय है।

(6)नया यमुना पुल

इलाहाबाद नगर से नैनी जाने के लिए पुराने पुल के टैऊफिक जाम की समस्या को खत्म करने के लिए नये यमुना पुल का निर्माण कार्य वर्ष 2000 में शुरू हुआ और यह 2004 में बनकर तैयार हो गया। यह पुल केबल आधारित है इसे बनाने में स्टील का प्रयोग किया गया है यह यमुना नदी पर उत्तर-दक्षिण दिशा में 1,510 मी. (4,954 फीट) लम्बा तथा 250 फीट चौडा है। इस पुल में 6 लेन के अतिरिक्त पैदल एवं साइकिल के लिए अलग लेन बनाया गया है। इसका निर्माण हिन्दुस्तान कंस्ट्रक्शन कम्पनी एवं हुण्डई इंजीनियरिंग एवं कंस्ट्रक्शन कम्पनी के तत्वाधान में किया गया, इस परियोजना के मुख्य इंजीनियर मनीष त्रिपाठी थे। यह देखने में बहुत ही सुन्दर है तथा यहाँ पर शाम में पर्यटकों की अच्छी-खासी संख्या पायी जाती है। इस पुल से गंगा-यमुना के संगम का मनोरम दृश्य बहुत ही मनमोहक लगता है। **कुम्भ के बारे मे अधिक जानकारी अगले अंक में...**